

hemmen: यो नो अये अरिविं अघायुरातीवा मर्चयति द्वयेन RV. 1, 147, 4. मा नः शंसो अरुषो धूर्तिः प्र णञ्चत्यस्य 18, 3. पाकि नो अये रत्नसो अरु-  
ष्टापाकि धूर्तररुषो अघायोः 7, 1, 13. पुरा गृध्रादरुषः पिबातः 5, 77, 1.  
1, 180, 2. 7, 56, 19. 94, 8.

अरु (3. अ + रु) adj. dass.: के चिद्यावीरुहं प्रूर मर्त्यम् RV. 1, 129,  
3. ein Dämon: अर्मिनीनारुहं यश्चतुष्पात् 10, 99, 10. अपारुहं पृथिव्यै देव-  
यज्ञनाद्ध्यासम् VS. 1, 26. ÇAT. Br. 1, 2, 4, 17. N. des Schlafes: अरुर्नामी-  
सि (स्वप्न) AV. 6, 46, 1. Nach Up. 4, 80: Feind.

अरु interj. des hastigen Rufens ÇABDAR. im ÇKDr.

अर्यः अर्यति (आराकर्मणि, West.: facere periculum, experiri) gaṇa  
काण्डादि.

अरु m. N. eines Baumes, Calosanthus indica Bl., AK. 2, 4, 2, 38.  
Suçr. 2, 436, 8. अरुदण्डं यदायुधम् Kauç. 43. — Vgl. अरु.

अरुलुक m. dass. Suçr. 2, 389, 8.

अरविन्द n. 1) Lotusblume, Nelumbium speciosum oder Nymphaea  
Nelumbo AK. 1, 2, 2, 38. H. 1160. blüht mit Sonnenaufgang auf Kumāras.  
1, 32. ist wohlriechend ÇAK. 55. RAGH. 1, 43. अरविन्दति R. 5, 33, 11. लञ्-  
रणारु° RAGH. 13, 23. Hit. 59, 1. Kumāras. 1, 33. फुल्लारविन्दवदना KAU-  
RAP. 1. ÇĀṆGĀRAT. 4. परिज्ञानमुखारविन्दा RAGH. 14, 50. ÇRUT. 30. rother Lo-  
tus (रक्तकमल), blauer Lotus (नीलात्पल) RĀGAM. im ÇKDr. — 2) m. der  
indische Kranich ÇKDr. (vgl. AK. 2, 5, 22). — 3) Kupfer RĀGAM. im  
ÇKDr. — Wird in अर + विन्द zerlegt Siddh. K. zu P. 3, 1, 138. Vor.  
26, 35.

अरविर्दिनी f. eine Gruppe von Arayinda gaṇa पुष्करादि zu P. 5,  
2, 135.

अरुश्मन् (3. अ + रु°) adj. ohne Strang: अरुश्मानो ये रथा अयुक्ताः RV.  
9, 97, 20.

अरुस (3. अ + रुस) adj. 1) saftlos, geschmacklos: अरुसाश Genuss fader,  
nicht saftiger Speisen, Kasteiung Kauç. 141. अरुसाशिन 42. — 2) kraft-  
los, wirkungslos, matt: विषम् RV. 1, 191, 16. अरुसाः सन्तु कल्बरीः AV. 4,  
18, 1. निरिन्द्रिया अरुसाः सन्तु सर्वे (सपत्नाः) 9, 2, 10. 2, 27, 1. 31, 3, 4, 6,  
1, 6, 7, 2. 5, 8, 6. 13, 7. u. s. w. — 3) ohne Geschmackssinn: ब्रह्म ÇAT. Br.  
14, 6, 8, 8 = Bṛh. Ār. Up. 3, 8, 8.

अराजक (von 3. अ + राजन्) adj. königlos M. 7, 3. DRAUP. 6, 5. MBh. 12,  
2497. fgg. R. 2, 67, 7. fgg. KĀN. 57. KATHĀS. 15, 100.

अराजन् (3. अ + रा°) ved. gaṇa चार्वादि, अराजन् Nicht-König ÇAT. Br.  
3, 4, 4, 7, 8. 13, 4, 2, 17. AIT. Br. 8, 23.

अराजिन (3. अ + रा°) adj. glanzlos: (मरुतः) वि वृत्रं पर्वशो ययुर्वि  
पर्वतां अराजिनः RV. 8, 7, 23.

अराट m. N. pr. mit dem Bein. कालाम Lalit. 226. fgg. 377. Vgl. अराट.

अराटकी f. N. der Pflanze Aḡaçṛṅgī oder Beiw. derselben: अजमृद्व-  
राटकी तीक्ष्णपङ्क्ति व्युषतु AV. 4, 37, 6. — Vielleicht verwandt mit अ-  
राल; vgl. अरु und अरुल.

अराट oder अराळ (अ° + रा°) m. N. pr. s. अराळिह.

अरति (3. अ + राति) 1) f. a) Ungunst, malignitas; a) persönlicher  
Wesen: Kargheit, Härte, Uebelwollen; β) der Verhältnisse: Misslingen,  
Ungemach. Auch im pl. gebraucht. मा नो अरतिरीशत देवस्य मर्त्यस्य  
च । परिष तस्या उत द्विषः ॥ RV. 2, 7, 2. अ-या तपति माघान्युषो वनुषाम-

रातयः 7, 83, 5. न्यराती ररावणा विद्या अर्यो अरतीरितो युक्त्वामुरः 8,  
39, 2. नि वो नु मन्युर्विशतामरातिः 10, 34, 14. नृद्वरातिं परिपुन्यन्मं मू-  
गम् AV. 3, 15, 1. RV. 9, 79, 3. AV. 2, 7, 4. 3, 31, 1. 10, 5, 36. 11, 8, 21. 19,  
31, 11. भूताय वा नारातये ÇAT. Br. 1, 1, 2, 20. अपनुधं नृदतामरातिम् TAITT.  
Br. 3, 1, 1, 14. — b) Bezeichnung sowohl einer Unholdin, welche die  
guten Bestrebungen der Menschen vereitelt und ihre Wohlfahrt stört,  
als einer Mehrzahl schädlicher Unholde. आ नो भू मा परिं षा अराते मा  
नो रक्षीर्दक्षिणो नीयमानाम् । नमो वीर्त्साया असमृद्धये नमो अस्वरातये ॥  
AV. 5, 7, 1 (vgl. das ganze Lied). आरादरातिं निरक्षितिं पेरा प्राक्षिं क्रव्यादः  
पिशाचान् 8, 2, 12. मृत्युषी निरक्षितिं याज्ञगन्थातिष्ठारतिं प्र पत मेरु रस्याः  
14, 2, 19. 1, 18, 1. 6, 124, 3. 12, 3, 17. अत्रा पुर्धिर्जकुद्रातीर्मदे सेमस्य  
मूरा अमूरः RV. 4, 26, 7. ससत्तु त्या अरातयो बोधत्तु प्रूर रातयः 1, 29, 4. वि-  
द्या अये ऽप द्दुहारातीः 7, 1, 7. मात स्युर्नो अरातयः 10, 37, 1. 1, 43, 8. 116,  
21. 2, 23, 9. 9, 97, 10. 10, 85, 32. 174, 2. VS. 1, 7. 11. 14. 16. 29. 5, 26. कू-  
णामि भृगिन् मापे द्वाह्वरातयः AV. 6, 129, 1. 2, 10, 7. 3, 1, 1. 2, 1. 5, 23, 2.  
12, 2, 45. 13, 1, 20. 19, 50, 3. प्रत्युष्टं रतः प्रत्युष्टा अरातयः ÇAT. Br. 1, 1, 2, 2.  
अवधूतं रतो ऽवधूता अरातयः 4, 4. अप देषांसि नृदतामरातीः TAITT. Br.  
3, 1, 1, 13. — 2) in der spätern Sprache m. in der Bedeutung Feind AK.  
2, 8, 1, 11. 3, 4, 1, 86. H. 729. PĀṆĀT. III, 10. Hit. I, 203. 77, 7. RAGH.  
12, 89. PRAB. 16, 15 (आरातयः gegen das Metrum). 117, 11. 17. Vgl. अरि.

अरातिहृषण (अ° + हृ°) adj. Ungunst, Unheil zerstörend AV. 19, 34, 4.

अरातिहृषि (अ° + हृ°) adj. dass. AV. 2, 4, 6.

अरातियु s. u. अरातीय.

अरातिक (अ° + कृ°) adj. Unheil vernichtend AV. 19, 33, 2.

अरातीय (von अराति) act. Unglück bringen wollen. mit dem dat.: यो  
अस्मन्-यमरातीयात् VS. 11, 80. ÇAT. Br. 1, 2, 4, 14. 3, 2, 11. 4, 5, 6. u. s. w.  
part. अरातीर्यत् missgünstig, abhold, schadenfroh RV. 1, 99. VS. 11, 80.  
12, 5. AIT. Br. 3, 11. Die Form अरातियु AV. 4, 36, 1: यो नो डरस्यादि-  
प्साच्चाद्यो यो नो अरातीयात्.

अरातीयु (von अरातीय) adj. unheildrohend, feindselig AV. 10, 6, 1.

अरातीर्वन् (von अराति) adj. abgünstig, abhold; auch Bezeichnung von  
Dämonen RV. 1, 147, 4 (s. u. अरिविन्). उत वा यो नो मर्चयादनामो  
ऽरातीवा मर्तः सानुको वृकः RV. 2, 23, 7. अरातीवा मा नस्तर्हिन्मो च नः  
किं चनाममत् 9, 114, 4. 8, 51, 11.

अरिडि (3. अ + राडि) f. Missgunst VS. 30, 9.

अराधम् (3. अ + रा°) adj. ungütig, hart, eigennützig, geizig: मर्तम्  
RV. 1, 84, 8. पदा पुणोरराधसो नि बाधस्व 8, 53, 2. अप अनामराधसं कृता  
मूखं न भृगवः 9, 104, 13. 10, 32, 2. 60, 6. मा त्वा वोचनराधसं ज्ञासः AV.  
5, 11, 7. 12, 5, 70, 75.

1. अरय (3. अ + राय) m. Knicker, Geizhals: न पापसो मनामहे नारा-  
यासो न जळ्ळवः RV. 8, 30, 11. Nir. 6, 25.

2. अरय (wie eben) m. °यी f. Unhold, Unholdin, Bezeichn. einer Gat-  
tung von Dämonen: अराये-यो जिघत्सु-ये इमं मे परिं रतत AV. 8, 2, 20.  
अरायो अस्य मुष्का-यो भंसो अयं कृन्मसि 6, 4, 5. अरायमसुकावाचं यश्च  
स्फातिं जिह्वीरति 2, 25, 3. ये गन्धर्वा अस्मत्सो ये चारायाः किमीदिनेः 12,  
1, 50. 11, 6, 16. 16, 6, 7. fem. Nir. 6, 30. अराय्यं ब्रह्माणस्पते तीक्ष्णपङ्क्तौ-  
षत्रिकु RV. 10, 153, 2. 1. अमो यो अंधरादुक्तत्रं सत्त्वराय्यः AV. 2, 14, 3.  
अयमयं यातुधानानप सर्वा अराय्यः 4, 18, 8. 7. 1, 28, 4. 4, 17, 3.